विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

ई - पत्रिका (अंक-9) जुलाई -2021

ज्ञानोदय

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर , सी - 41 , सेक्टर–12 , नोएडा

मासिक ई –पत्रिका जुलाई – 2021

ज्ञानोदय -अंक - 9

संरक्षक

श्री वी.एल.मल्होत्रा

श्री प्रताप मेहता

श्री मधुसूदन दादू

श्री रविंद्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक

बलवीर सिंह (आचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह, श्री दीपक कुमार

श्रीमती रेखा सिन्हा, श्रीमती हिमाद्री पुंढीर

क्रम-सूची

- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- शुभकामनाएँ
- संपादकीय
- आचार्य अभिव्यक्तियाँ
- अभिभावक अभिव्यक्तियाँ
- शिशु वाटिका का शैक्षिक वर्ग
- जयंतियाँ
- गुरु पूर्णिमा व विद्यारंभ संस्कार
- विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस
- सामान्य ज्ञान
- जन्मदिन इस प्रकार मनाया करें
- संकुलशः आचार्य सम्मेलन - संकुल नोएडा

प्रधानाचार्य जी की कलम से

गतांक से आगे -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

* पाँच वर्षीय फाउंडेशन स्टेज में शिक्षा व्यवस्था लचीली ,बहु स्तरीय खेल , तथा गतिविधि आधारित होगी ।

* प्रीप्रेटरी स्टेज 3 वर्ष की होगी जिसमें कुछ सरल पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षा को भी शामिल किया जाएगा तथा जिसमें पढ़ने ,लिखने ,बोलने , शारीरिक शिक्षा ,कला, विज्ञान , भाषा और गणित विषय शामिल होंगे ।

* मिडिल स्टेज में भी 3 वर्ष की शिक्षा होगी जिसमें विषय विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा विज्ञान , गणित ,कला खेल ,सामाजिक विज्ञान ,मानविकी और व्यावसायिक विषयों में मूल अवधारणाओं पर काम शुरू होगा। हर विषय में अनुभव आधारित शिक्षण तथा विभिन्न विषयों के मध्य परस्पर संबंध देखने को प्रोत्साहित किया जाएगा ।

* सेकेंडरी स्टेज में 4 साल के बहु विषयक अध्ययन शामिल होंगे जो अधिक गहराई ,अधिक आलोचनात्मक सोच ,जीवन आकांक्षाओं पर अधिक ध्यान और विद्यार्थियों द्वारा विषयों के चुनाव को लेकर अधिक लचीलापन के साथ होंगे।

* सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि का समग्र केंद्र बिंदु शिक्षा प्रणाली को रखने की पुरानी प्रथा से अलग वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना है। शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और 21वीं सदी के मुख्य कौशल से सुसज्जित करना है ।

वास्तव में ज्ञान एक छुपा हुआ खजाना है तथा शिक्षा व्यक्ति की प्रतिभाओं के साथ इसे प्राप्त करने में सहायता करती है।

* पाठ्यक्रम की विषय वस्तु को प्रत्येक विषय में कम करके इसे बुनियादी चीजों पर केंद्रित किया जाएगा , ताकि गहराई से चिंतन , खोज आधारित ,चर्चा आधारित और विश्लेषण आधारित अधिगम पर जरूरी ध्यान दिया जा सके । सवाल पूछने को प्रोत्साहित किया जाएगा और कक्षाओं में नियमित रूप से अधिक रुचिकर , रचनात्मक ,सहयोगात्मक और खोजपूर्ण गतिविधियां होंगी , जिससे गहन और प्रायोगिक सीख को सुनिश्चित किया जा सके।

सधन्यवाद !

भवदीय

प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

शुभकामनाएँ

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा अपनी ई-पत्रिका "ज्ञानोदय" का जुलाई अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका विद्यालय में चल रही सभी गतिविधियों और उपलब्धियों को उजागर करने का एक माध्यम है। कोई भी पत्रिका विद्यालय के विकास में तीन प्रकार से योगदान करती है- एक पत्रिका का प्रकाशन विद्यालय को निरंतर कुछ नया करने के लिए प्रोत्साहित करता है, दो पत्रिका का प्रकाशन यह सुनिश्चित करता है कि सभी कार्य एक निश्चित समय में हो तथा तीसरा कार्य पत्रिका के प्रकाशन से बच्चों में छिपे रचनात्मक कौशल का विस्तार होता है। इनके अलावा ई-पत्रिका पर्यावरण के अनुकूल है। आशा है कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए ई-पत्रिका को आकर्षक रूप में प्रकाशित किया जाएगा। मैं उन सभी छात्रों और शिक्षकों को बधाई देता हूं, जिनकी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशित होने जा रही हैं।

पत्रिका के प्रकाशन जुड़े सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य जी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ.अरुण सोलंकी (अध्यक्ष)
शिशु शिक्षा समिति (प. उ. प्र.)

आदरणीय बंधुवर,

श्रीमान बलवीर सिंह जी

आपकी सूचना अनुसार इस मास जुलाई मास की सरस्वती शिशु मंदिर की ज्ञानोदय मासिक पत्रिका का संपादन होने जा रहा है। गत महीनों की भांति सरस्वती शिशु मंदिर की मासिक पत्रिका इस मास भी अभिभावक बंधुओं अपने छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणादाई रहेगी। मासिक पत्रिका योग, आधुनिक विज्ञान एवं व्यायाम आदि के द्वारा अपने विद्यार्थियों को जागरूक एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी इस विश्व आपदा काल में बहुत प्रेरक बन रही है। संपादक मंडल के द्वारा इस सराहनीय प्रयास का शब्दों से कोई वर्णन नहीं हो सकता।

मैं संपादक मंडल ,अभिभावकों, विद्यार्थियों ,प्रबंध समिति एवं इस कार्य में सहयोगी रहने वाले सभी बंधुओं को इस सराहनीय कार्य के लिए शुभकामनाऐं देता हूँ ।

विनोद कौशिक (सह विभाग कार्यवाह)
नोएडा विभाग

शुभकामना संदेश

Topic _____ Date _____

प्रिय सम्पादक मण्डल,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आपका विद्यालय मासिक ई-पत्रिका "ज्ञानोदय" का जुलाई मास का अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका केवल विद्यालय में होने वाली गतिविधियों के प्रसारण का साधन मात्र नहीं है, अपितु भैया-बहिनों एवं आचार्यों के अन्दर छिपी प्रतिभाओं को प्रस्फुटित करने वाली ज्योति है, जो सम्पूर्ण समाज के जीवन को ज्योतिर्मय करती है।

यह पत्रिका भैया-बहिनों, आचार्यों व अभिभावकों को नई दिशा प्रदान करेगी।

इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ .....

भवदीय

ॐ विनोद अग्रवाल

सचिव

स.शि.म.शि.स.

मेरठ

शुभकामनाएँ

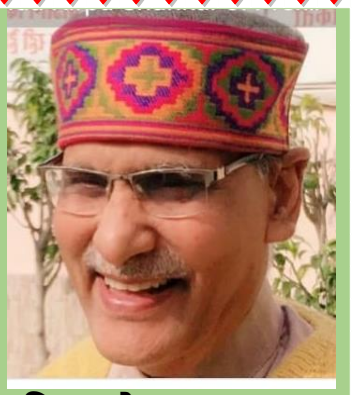

आदरणीय बंधुवर,
श्री बलबीर सिंह जी

यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा की ई- पत्रिका "ज्ञानोदय" का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका संस्था के क्रियाकलापों और गतिविधियों का दर्पण होती है। पत्रिका में प्रयुक्त सामग्री का संकलन, चयन और प्रकाशन भैया - बहिनों और समाज के लिए प्रेरणादायी व ज्ञानवर्धक होगा ।

इस आशा और विश्वास के साथ पत्रिका के सफल संपादन हेतु मेरी शुभकामना आपके व पत्रिका संपादक मंडल के साथ है ।

आपका
कृपाशंकर
संयुक्त क्षेत्र प्रचार प्रमुख
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

संपादकीय.....

हम आज भी अपने बच्चों को स्कूल की क्लास रूम में बिठाकर ही शिक्षा ग्रहण कराने में ज्यादा विश्वास करते हैं। लेकिन विगत कुछ वर्षों से हमारे देश में ऑनलाइन शिक्षा (Online Education) भी काफी लोकप्रिय हुई है।

कोरोना के बढ़ते खतरे के कारण पूरे देश में हुए लॉकडाउन की वजह से जब सारी शिक्षण संस्थाएं बंद हो गई। तब बच्चों को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षा का मजबूत सहारा मिला। लगभग सभी स्कूलों के द्वारा इंटरनेट के माध्यम से बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है। ताकि बच्चों की पढ़ाई का नुकसान ना हो। और आज देश के अधिकतर विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से जुड़कर काफी खुश भी हैं।

पत्रिका में त्रुटियों के लिए मैं हृदय से क्षमा प्रार्थी हूँ । आप सभी से आशा करती हूँ , कि आप हमारे प्रयासों की सराहना करेंगे।

हिमाद्री पुंढीर
(सह संपादक)

आचार्य अभिव्यक्तियाँ

सूक्तियों से अपना नाता जोड़ें

हमारे जीवन की उन्नति में सूक्तियाँ प्रकाश- स्तंभ का काम करती है। एक सूक्ति में ज्ञान सिद्धांत अनुभव नीति अथवा भावों का साथ थोड़ी सी शब्दों में पिरोया हुआ होता है। वह गागर में सागर भरने का काम करता है।

सूक्ति विद्या के वृक्ष का मधुर फल है। चिंतन मनन के खेत की कीमती फसल है। एक श्रेष्ठ सूक्ति ऐसी अमर वाणी है जो युगों युगों तक अपना गहरा असर दिखाती है। जीवन को सुखी और सफल बनाने की प्रेरणा उसमें कूट कूट कर भरी होती हैं।

अच्छी सूक्ति याद करने से आप भाषा कला में निपुण हो सकते हैं। बातचीत में उनका प्रयोग करके दूसरे को अपनी और प्रभावित कर सकते हैं। परीक्षा में अच्छे अंक ला सकते हैं।

व्यक्तित्व विकास के लिए अंधेरे में दीपक का काम करती हैं।

सूक्तियों के कुछ उदाहरण हैं-

1- पहला सुख निरोगी काया

2- आलस्य से बढ़कर कोई पाप नहीं

3- कर्तव्य पालन सबसे बड़ी पूजा है

4- मन बदलने से संसार बदल जाएगा

5- स्वाद के लिए स्वास्थ्य मत खोइए

कुछ सूक्तियाँ हमारी जीवन यात्रा को सुरक्षित सुखद सुगम और सफल बनाती हैं

जैसे यातायात के संकेत होते हैं वैसे ही जीवन के नए-नए मोड़ों पर अच्छी सूक्तियाँ हमें सही रास्ता दिखाती हैं।

सूक्ति संग्रह के इस अनोखे कार्य के लिए प्रतिदिन हमको 5 मिनट का समय देना पड़ेगा

आपके मन में यह सवाल पैदा हो रहा होगा हम रोज नई-नई सूक्तियों को कहां पर खोजेंगे । अखबारों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, अच्छे लोगों की बातचीत और भाषण से भी इस कार्य में बड़ी सफलता मिल सकती है

आज से हम सब एक निश्चय करें आज की सूक्तियाँ अपनी डायरी में लिखेंगे। भविष्य में आपको खुद आश्चर्य होगा कि इस एक निर्णय ने आपके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन किया है। आपको निश्चित ही जीवन में नयी ऊर्जा मिलेगी, आपको नवीन ऊंचाइयों पर पहुंचने में अद्भुत सहायता मिलेगी।

धन्यवाद !

सुधा बाना
शिशु वाटिका प्रभारी
सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

जनसंख्या नियंत्रण

हमारे देश में एक बार फिर जनसंख्या नियंत्रण करने के स्वर गूंजने लगे हैं। उत्तर प्रदेश जनसंख्या नियंत्रण बिल इसी समस्या को सुलझाने हेतु एक दूरगामी बिल है । अगर हम भारत की बात करें तो आज जनसंख्या के मामले में हम लगभग चीन के बराबर पहुंच चुके हैं जबकि चीन का भौगोलिक क्षेत्रफल हमसे 3 गुना बड़ा है। विश्व की एकमात्र महाशक्ति अमेरिका की जनसंख्या भारत की एक चौथाई से भी कम है जबकि अमेरिका का क्षेत्रफल भारत से लगभग 7 गुना बड़ा है। भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश को अगर एक देश माना जाए तो जनसंख्या के मामले में यह विश्व में पांचवी पायदान पर होगा। इसी प्रकार की स्थिति देश के अन्य राज्यों में भी है जिसका परिणाम यह है कि हम जितने भी संसाधन जुटा लें, जितनी भी सुविधाएं बढ़ा लें, जनसंख्या के हिसाब से यह बौने ही साबित होंगे। चीन और भारत ने अपना जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम लगभग एक साथ 80 के दशक के आसपास शुरू किया था परंतु किन्ही राजनीतिक व सामाजिक कारणों से भारत का यह जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम ठप हो गया और सिर्फ नारों की भेंट चढ़ गया। जबकि चीन ने अपने निर्धारित लक्ष्य की समय रहते प्राप्ति कर ली।

इस अभूतपूर्व जनसंख्या के नियंत्रण से ही हम संसाधनों का समुचित उपयोग कर पाएंगे और अपने शहरों को स्लम बनने से रोक पाएंगे। इसके लिए आवश्यकता है हमें एक ऐसी कानून की जिसका ध्येय और उद्देश्य लोगों को सीमित परिवार रखने के लिए बिना डर और बिना हिचक जागरूक करना हो। मुझे यकीन है की उत्तर प्रदेश का जनसंख्या नियंत्रण बिल इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जो अन्य राज्यों और समस्त भारतवर्ष के लिए एक उदाहरण के तौर पर बनने वाला कानून होगा। अब समय आ गया है कि 'छोटा परिवार सुखी परिवार' के नारे को वास्तविक पटल पर उकेरा जाए और अपने सपनों के भारत का निर्माण किया जाए जहां हमारी जनसंख्या और हमारे लोग हमारे लिए अभिशाप नहीं बल्कि वरदान साबित हों।

जय हिंद, जय भारत !

प्रीती शर्मा

सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

संस्कृति और परंपरा

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है, साथ ही संस्कृति व परंपरा सदैव इसकी पूरक रही है। संस्कृति का अर्थ ही आध्यात्मिक तथा बौद्धिक विकास होता है। प्राचीन काल से ही किसी भी शिक्षा प्रणाली में उस समाज की संस्कृति तथा परंपराओं की सूक्ष्म झलक दिखलाई पड़ती है। असल में संस्कृति किसी समाज की पहचान होती है और अनेकों बार शिक्षा ही समाज की परंपराओं व संस्कृति की सुरक्षा करती है। किसी भी समाज की संस्कृति व शिक्षा एक दूसरे में इस प्रकार विलीन हो गए हैं, कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। तत्कालीन समय में संस्कृति व परंपराओं का बोध बालकों में आवश्यक हो गया है, जिससे पाल्यों का नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास हो सके। बालक अपनी मूलधारा, देश गौरव, संस्कृति व संस्कारों से जुड़े रहे। इस दिशा में विद्या भारती के प्रयास अत्यंत सराहनीय है, इस समय जहां हर देश का रुख पश्चिम सभ्यता की ओर बढ़ रहा है, विद्या भारती तथा इनके शिक्षा मंदिर देश के मूल स्वभाव को देश के भविष्य में उतारने को प्रयासरत है, और मैं आश्वस्त हूं कि आने वाला भारत इस नई पीढ़ी द्वारा दोबारा विश्व गुरु के पद पर विराजमान होगा।

जीतेन्द्र कुमार गुप्ता
आस्था गुप्ता -2nd B

संस्कृति और परंपरा

हम आयुष के माता-पिता हैं। हम इतने शिक्षित नहीं हैं। अपनी परिस्थितियों के कारण हमारे जीवन में शिक्षा का अभाव रहा। परंतु जिस वर्ग एवं संस्थान से हमारा पालन-पोषण हुआ उस कारण संस्कृति और परंपराओं का बहुत अधिक प्रभाव हमारे जीवन पर रहा जिस कारण हम अपना निर्वाह संतुष्ट तरीके से कर पाए। केवल शिक्षा से यह जरूरी नहीं कि हमें ज्ञान की प्राप्ति हो यह तभी संभव है, जब संस्कृति, परंपराओं और शिक्षा का उचित मिश्रण बालक को प्राप्त हो, बालक तभी परिस्थितियों का उचित मूल्यांकन कर सकता है।अपने कर्तव्य का पालन निष्ठा से कर सके, बालक का समाज में उचित योगदान हो, और सही दिशा की ओर निरंतर बढ़ सके यह तभी संभव है, जब संस्कृति और संस्कार का प्रभाव निरंतर बालक पर पढ़ता रहे।संस्कृति, परंपरा और संस्कार ठीक उसी प्रकार हैं जैसे पेड़ की जड़े और खाद जितनी गहरी जड़े होंगी इतना मजबूत और तंदुरुस्त पौधा फलों से भरपूर हमें मिल पाएगा। इसी प्रकार बालक की जड़ें जितनी संस्कृति में गहरी होंगी उतना ही वह जीवन में परस्पर समाज के उद्धार का प्रयास पूर्ण निष्ठा से कर पाएगा।

संस्कार और परंपराएं हमारी धरोहर और हजारों वर्षों की संपत्ति हैं। विज्ञान के परिपेक्ष में अगर हम समझना चाहे तो जिस प्रकार बालक अपने माता-पिता का डीएनए लेकर पैदा होता है ठीक उसी प्रकार संस्कार और परंपराएं बालक का मानसिक एवं बौद्धिक पोषण करती हैं। जिस प्रकार एक भवन निर्माण के लिए एक मजबूत नींव की आवश्यकता होती है उसी प्रकार बालक के जीवन को उजागर करने के लिए परंपराएं और संस्कृति बालक के जीवन को एक मजबूत नींव प्रदान करती है।

धन्यवाद !

सोनू यादव और मीरा यादव
Ayush Yadav- 2nd D

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

समाज शिक्षा के माध्यम से ही अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखता है,शिक्षा और समाज में गहरा संबंध है। शिक्षा परम्परा की धरोहर को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक पहुंचाती है और इस तरह से संस्कृति की निरंतरता बनाए रखने में सहायक होती है।

अर्थात एक के अभाव में दूसरे की विकास की कल्पना ही नहीं कि जा सकती,आज किसी भी समाज की शिक्षा उसके धर्म – दर्शन, स्वरूप, उसकी अर्थव्यवस्था, मनोवैज्ञानिक खोजों और वैज्ञानिक अविष्कारों पर निर्भर करती है। संस्कृति एक बहुत व्यापक विषय है,यह किसी समाज की सम्पूर्ण जीवन - शैली की द्योतक है।

भारतीय संस्कृति जीवन की विधि है ।
संस्कारों से पोषित बहुमूल्य निधि है ।।

जूही राज सिंह
Sakskam singh - 2nd D

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

संस्कृति किसी भी समाज की पहचान होती है। यह उसके रहन-सहन , खानपान की विधियों , व्यवहार, प्रतिमानों ,रीति- रिवाज, कला -कौशल, संगीत-नृत्य,भाषा-साहित्य,धर्म-दर्शन और मूल्यों के विशिष्ट रूप में जीवित रहती है। तब किसी समाज की शिक्षा पर उसकी संस्कृति का प्रभाव पढ़ना स्वभाविक है। जिस समाज में संस्कृति आध्यात्म प्रधान होती है,उस समाज में शिक्षा स्कूल की अपेक्षा सूक्ष्म की प्राप्ति की ओर अधिक झुकी हुई होती है। जिस समाज की संस्कृति भौतिकवादी होती है उसकी शिक्षा प्रतियोगिता पर आधारित होती है और शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्ति का श्रम भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति की और नियोजित होता है। दूसरी ओर कोई समाज शिक्षा के माध्यम से ही अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखता है। उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में कल संक्रमित करता है और उसमें परिवर्तन एवं विकास करता है।

इस प्रकार संस्कृति और शिक्षा में गहरा संबंध है , यह एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। सच कहा जाए तो एक के अभाव में दूसरे के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती। किसी भी समाज की संस्कृति और शिक्षा किसी ना किसी रूप में एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। और यह एक ऐसा चक्र है जो सदैव से चलता आ रहा है और सदैव ही चलता रहेगा।

राधिका सोनी
Ayushman -2nd A

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

प्रत्येक समाज की शिक्षा का स्वरूप उस समाज की संस्कृति पर निर्भर करता है। शिक्षा के अभाव में कोई भी समाज न तो संस्कृति को सुरक्षित रख सकता है और न ही उसका विकास कर सकता है। शिक्षा का स्वरूप समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप होता है जो कि संस्कृति द्वारा निर्धारण होती हैं, अर्थात् शिक्षा और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग कार्य और विचार की नई पद्धतियाँ सीखते रहते हैं, उससे व्यवहार में ऐसे बदलाव लाने को बढ़ावा मिलता है। जिनसे मनुष्य की स्थिति में सुधार आए।

छात्रों में एक सामजिक भाव की संस्कृति पनपने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक आर. इस. बार्थ लिखते हैं- "एक छात्र के जीवन पर और स्कूल में उसकी हो रही शिक्षा पर शिक्षा विभाग, अधीक्षक, स्कूल बोर्ड इतना ही नहीं, स्कूल के प्रिंसिपल से भी उस स्कूल की संस्कृति का ज्यादा गहरा प्रभाव होता है।"

रेनू यादव
हेतल यादव-2nd A

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध- आजकल हमारे देश में पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण होने लगा है इसके फलस्वरूप माता-पिता दोनों ही नौकरी करते हैं और बालक या तो घर पर अकेला रहता है या फिर क्रैच (शिशुगृह) में रहता है इसलिए शिक्षा में संस्कृति व परंपराओं का समावेश होना बहुत ही आवश्यक हो गया है। बालक को ऐसा वातावरण मिलना चाहिए। जिससे शिक्षा के साथ-साथ बालक को संस्कारों की शिक्षा भी मिले। ताकि भविष्य में वह संस्कार युक्त नागरिक बने। एक संस्कार युक्त नागरिक घर, परिवार, समाज व देश के लिए उत्तम रहेगा।

नीरज कुमार मिश्रा
संस्कार मिश्रा-2nd C

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

शिक्षण संस्थान ज्ञान के मन्दिर हैं। मन्दिर इसलिए कि ज्ञान से पवित्र सृष्टि में और कुछ है ही नहीं। "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" शिक्षा देना (विद्या दान) और ग्रहण करना दोनों ही हमारे यहां धर्म की श्रेणी में आते हैं।वेद कहता है कि ज्ञान और ब्रह्म पर्यायवाची हैं। शंकराचार्य भी यही कहते हैं कि ब्रह्म ज्ञान मात्र है। ज्ञान का आधार विद्या है। शिक्षित व्यक्ति ही किसी देश की संस्कृति और सभ्यता है। इस देश में ज्ञान का सम्मान कितना है कि वेदव्यास, वाल्मीकि, पाणिनी, पतंजलि जैसे मनीषियों को भगवान मान लिया। क्योंकि ज्ञान व्यक्ति को मिथ्या दृष्टि से मुक्त कराता है। जीवन तथा ईश्वर में आस्था पैदा करता है। समाज विरोधी तत्त्वों को ज्ञान के प्रभाव से दबा देने की शक्ति प्राप्त करता है। व्यक्ति स्वयं से परिचय करके ही स्वतन्त्र हो सकता है।

महात्मा गांधी ने भी 'नई तालीम' का विचार दिया था जिसमें शरीर, हाथ, बुद्धि सबका संतुलन होता है और इसके लिए उन्होंने स्थानीय संसाधन के उपयोग का सुझाव दिया था। इसमें निरी बौद्धिकता पर अतिरिक्त बल न देकर शरीर, मन, आत्मा सब पर ध्यान देने की बात कही गई। इसके अंतर्गत स्वावलंबन, देशभक्ति, आत्म-संपन्नता और संयम जैसे जीवन मूल्यों पर बल देना प्रस्तावित है। प्राथमिक शिक्षा से मोहभंग के साथ कई विकल्पों पर काम शुरू हुआ। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने शांतिनिकेतन के पास श्रीनिकेतन बनाया था। रुक्मिणी देवी अरुंडेल, एनी बेसेंट और जे कृष्णमूर्ति ने भी अलग-अलग प्रयास किए। इन सब प्रयासों में जीवन कौशल और कला पर बल दिया गया ताकि छात्रों को आस-पास की दुनिया से जुड़ने का भी अवसर मिले। उनका मानना था कि समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए प्राचीन और नए हुनर भी आने चाहिए जो संस्कृति विशिष्ट होते हैं।

शिक्षा के मूल्य की अभिव्यक्ति मूर्त और अमूर्त, दोनों माध्यमों से होती है। समाज और समुदाय व्यक्ति से ऊपर होते हैं। भारत की समृद्ध वाचिक परंपरा बड़ी प्राचीन है। मनुष्यता के विकास के लिए संस्कृति आधारित शिक्षा के अतिरिक्त और कोई साधन उपलब्ध नहीं है।

भारतीय संस्कृति की दृष्टि में अच्छी दुनिया वह है जिसमें बहुलता, पारस्परिकता और सह अस्तित्व हों,सामाजिक संस्कारों से जुड़ा यह स्तंभ नई पीढ़ी को पढ़ाना अत्यंत आवश्यक है ।

आशुतोष कुमार शर्मा
शांतनु शर्मा-2nd F

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

विश्व की प्राचीनतम संस्कृति में भारत का पहला स्थान है भारत संसार का एक प्राचीन विशाल देश है यहां ऋषि-मुनियों ने वनों नदी तटों और पर्वतों की गुफा आदि में बैठकर ज्ञान प्राप्त किया था, उसी ज्ञान के प्रकाश से भारतीय संस्कृति का मार्ग प्रकाशित हुआ है। संस्कृति का संबंध माना कि आत्मा और मन से होता है भारतीय संस्कृति का मूल आदर्श आत्मा का ज्ञान ही है। इसमें संसार के भौतिक तत्वों के प्रति मोह नहीं है भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि सभी धर्म एवं संप्रदाय को एक साथ लेकर चलना और पूरे देश को एक मानना तभी तो भारत में लिखे गए वेद ,उपनिषद ,रामायण ,महाभारत और गीता आदि ग्रंथ भी सारे देश में एक समान पूजे जाते हैं।

महर्षि व्यास जी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने 18 पुराणों में दो ही बातें कहीं हैं परोपकार करना ही पुण्य है और दूसरों को पीड़ा देना ही पाप है भारतीय संस्कृति में पुण्य को ही प्रधानता दी गई है पाप कर्म का निषेध किया गया है।

गुंजा कुमारी
आराध्या-2ndF

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

भारत अपनी संस्कृति और परंपराओं के लिये पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, सभ्य संवाद, संस्कार, मान्यताएँ आदि हैं। अब जबकि लोगों की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने हमारे देश को महान बनाया है। अपनी खुद की संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करने के कारण भारत में लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहते हैं।

हमारी संस्कृति और परंपराओं का सीधा संबंध हमारी शिक्षा व्यवस्था पर है। हम अपनी सामाजिक और धार्मिक परम्परा ओर उनका उचित निर्वहन अपनी पाठ्य पुस्तक से ही तो सीखते हैं।

शिक्षा हमें हमारे महान देश के महापुरुषों, उनके त्याग और बलिदान के बारे में बताती है। शिक्षा एक सीढ़ी की तरह है जो हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ती है, जिसका सीधा असर हमारे जीवन निर्माण और संस्कार पर होता है।

बाबुल कुमारी
अतुल्य प्रताप-2ndF

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

संस्कृति किसी समाज की पहचान होती है। यह उसके रहन-सहन एवं खानपान की विधियों ,व्यवहार प्रतिमानो, रीति- रिवाज, कला कौशल ,संगीत ,नृत्य, भाषा, साहित्य, धर्म-दर्शन ,आदर्श, विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप में जीवित रहती है । तब किसी समाज की शिक्षा पर उसकी संस्कृति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है । आप देखें कि जिस समाज की संस्कृति अध्यात्म प्रधान होती है उस समाज में शिक्षा स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की प्राप्ति की ओर अधिक झुकी हुई होती है।

जिस समाज की संस्कृति भौतिकवादी होती है उसकी शिक्षा प्रतियोगिता पर आधारित होती है । शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्ति का श्रम भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर नियोजित होता है। दूसरी ओर कोई समाज शिक्षा के माध्यम से ही अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखता है , उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परिवर्तन एवं विकास करता है। इस प्रकार संस्कृति और शिक्षा में गहरा संबंध होता है। यह एक दूसरे को प्रभावित करते हैं । सच पूछिए तो एक के अभाव में दूसरे के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

पूजा सिंह
आराध्या सिंह -2nd E

संस्कृति व परंपराओं का शिक्षा से संबंध !

संस्कृति किसी समाज की पहचान होती है यह उसके रहन सहन , खानपान की विधियों , व्यवहार , प्रतिमानों ,रीति-रिवाज ,कला कौशल ,संगीत-नृत्य, भाषा-साहित्य ,धर्म-दर्शन, आदर्श, विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप में जीवित रहती है । तब किसी समाज की शिक्षा पर उसकी संस्कृति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। आप देखें कि जिस समाज की संस्कृति अध्यात्म प्रधान होती है । उस समाज में शिक्षा स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की प्राप्त की और अधिक झुकी हुई होती है और जिस समाज की संस्कृति भौतिकवादी होती है उसकी शिक्षा प्रतियोगिता पर आधारित होती है और शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्ति का श्रम भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर नियोजित होता है ।

समाज शिक्षा के माध्यम से ही अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखता है, उसमें परिवर्तन एवं विकास करता है । इस प्रकार संस्कृति और शिक्षा में गहरा संबंध होता है यह एक दूसरे को प्रभावित करते हैं सच पूछिए तो एक के अभाव में दूसरे के विकास की कल्पना ही नही की जा सकती ।

शैलेन्द्र सिंह
आर्यन सिंह-2nd E

शिशु वाटिका का शैक्षिक वर्ग

दिनांक - 10/07/21 से 15/07/21 तक नोएडा जिले में शिशु वाटिका का ऑनलाइन छः दिवसीय वर्ग आयोजित किया गया, जिसमें शिशु वाटिका के 12 आयामों पर चर्चा की गई।

जयंतियाँ

दिनांक -23 जुलाई 2021 को विद्यालय में बाल गंगाधर तिलक व चंद्रशेखर आज़ाद की जयंती श्रीमान प्रधानाचार्य जी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जिसका संचालन श्रीमती विंतेश जी ने किया। इस अवसर पर साधना जी ,मीरा जी , सुधा बाना जी , घनश्याम जी और हरिओम जी ने अपने विचार व्यक्त किये।

गुरु पूर्णिमा व विद्यारंभ संस्कार

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
विद्या भारती से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु वाटिका
सी- 41, सैक्टर- 12, नोएडा (गौतमबुद्धनगर)
विद्यारंभ संस्कार

विद्यारंभ संस्कार

दिनांक- 24 जुलाई 2021 को विद्यालय में गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हवन एवं विद्यारंभ संस्कार का आयोजन हुआ। जिसका विद्यालय के यूट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया।

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस

Class - 1st

REDMI NOTE 9 PRO MAX

5D

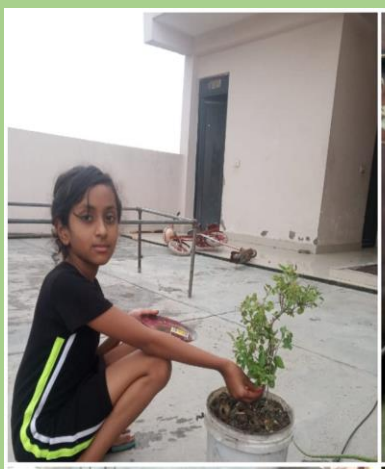

Happy

ratyush

Class 5th F

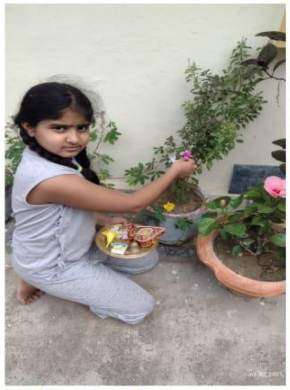

UKG-B

NUR-A

दिनांक- 28 जुलाई 2021 को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस के अवसर पर प्रकृति का पूजन- वंदन करते हुए विद्यालय के भैया / बहिन।

सामान्य ज्ञान

मोक्षदायिनी सप्तपुरियों की जानकारी

1. अयोध्या - सरयू नदी के तट पर (उत्तर प्रदेश)
2. मथुरा - यमुना नदी के तट पर (उत्तर प्रदेश)
3. माया (हरिद्वार) - गंगा नदी के तट पर (उत्तराखंड)
4. काशी - गंगा नदी के तट पर (उत्तर प्रदेश)
5. कांचीपुरम - चेन्नई के निकट (तमिलनाडु प्रदेश)
6. अवंतिका (उज्जैन) - क्षिप्रा नदी के तट पर (मध्य प्रदेश)
7. द्वारका - समुद्र तट पर - सौराष्ट्र (गुजरात प्रदेश)

भारतीय राष्ट्रीय एकता के प्रतीक चार धाम

1. उत्तर - बद्रीनाथ धाम
2. दक्षिण - रामेश्वरम धाम
3. पूर्व - जगन्नाथपुरी धाम
4. पश्चिम - द्वारका धाम

जन्मदिन इस प्रकार मनाया करें

1. जिसका जन्मदिन मनाया जाए उसे ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान करना चाहिए।
2. देवार्चन - दीप प्रज्वलन, पूजन, हवन, यज्ञ करके बालक/ बालिका को तिलक करें |
3. दान संकल्प -(उपहार न लेकर) सामर्थ्यानुसार दान देना चाहिए |
4. गौ ग्रास - गाय श्रद्धा का केंद्र है | अतः गाय को को गौ ग्रास खिलाना चाहिए |
5. वृक्षारोपण- जन्मदिवस पर एकाधिक पौधा अवश्य लगावें एवं उसका संरक्षण करें |
6. आशीर्वाद - बड़ों से आशीर्वाद प्राप्त करें|
7. सामर्थ्य अनुसार अतिथियों का सत्कार करें।
8. किसी एक गुण को अपने जीवन में समाहित करने का संकल्प लें।
9. मोमबत्ती बुझा कर अंधकार करने के स्थान पर दीपक जलाएं।
10. उपहार की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

जन्म दिवस गीत

हर्ष भरा ये जन्म दिवस ,चिर सुखमय मंगलमय हो ।

तन में बल मन में महानता भावों भरा हृदय हो ।

हर्ष भरा ये जन्म दिवस ,चिर सुखमय मंगलमय हो।

ईश कृपा का लेकर संबल ,पूज्य गुरुजनों का आशीष बल।

पुण्य प्रकाश भरे दिश - दिश में जीवन ज्योतिर्मय हो।

हर्ष भरा ये जन्म दिवस ,चिर सुखमय मंगलमय हो।

संकुलशः आचार्य सम्मेलन - संकुल नोएडा

2021-7-31 10:10

दिनांक- 31 जुलाई 2021 को नोएडा संकुल का आचार्य सम्मलेन आयोजित किया गया जिसमें विद्या भारती के लक्ष्य एवं नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के विषय में चर्चा हुई।